



CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF-5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 25th Dec. 2021, Revised on 28th Dec. 2021, Accepted 30th Dec. 2021

आलेख

राजस्थान के उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में निहित मूल्यों को ज्ञात करना

* डॉ. स्वाति पारीक

सहायक प्रोफेसर,

एस.एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
सांगानेर जयपुर

Email: druma7646@gmail.com

बीज शब्द – शाश्वत जीवन मूल्य, समसामयिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य आदि।

सार संक्षेप

प्रसिद्ध शोध कार्य का उद्देश्य उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में निहित मूल्यों को ज्ञात करना है इस हेतु विषय वस्तु विश्लेषण तथा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया शोध हेतु कक्षा 6 से कक्षा 8 की हिन्दी की पुस्तकें चयनित की गई निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि सभी पुस्तकों में मूल्यों की उपस्थिति अलग-अलग मात्रा में है।

प्रस्तावना

भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जिसका इतिहास समृद्ध है तथा वैविध्यता से परिपूर्ण है। यहाँ शिक्षा के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है, हमारे सहभागिता-आधारित लोकतंत्र एवं संविधान में प्रतिस्थापित मूल्यों को सुदृढ़ करना। इस चुनौती का सफलतापूर्वक सामना करने के लिये शिक्षा का शांति एवं सद्भावपूर्ण सह-अस्तित्व से संबंधित मूल्यों की ओर अभिमुखीकरण होना चाहिये। शिक्षा का उद्देश्य कारण और समझ पर आधारित लोकतंत्र, समानता, न्याय, स्वतंत्रता, परोपकार, धर्मनिरपेक्षता, मानवीय गरिमा व अधिकार तथा दूसरों के प्रति आदर जैसे मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता का निर्माण होना चाहिये।

शिक्षा के लक्ष्य समाज की वर्तमान महत्वाकांक्षाओं व आवश्यकताओं के साथ-साथ शाश्वत मूल्यों तथा समाज के तात्कालिक सरोकारों सहित वृहद मानवीय आदर्शों को भी प्रतिबिंबित करते हैं। किसी भी विशिष्ट समय और स्थान के संदर्भ में इन्हें व्यापक और शाश्वत मानवीय आकांक्षाओं की समकालीन और प्रासंगिक अभिव्यक्ति कहा जा सकता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 में व्यक्त किये गये ये विचार वर्तमान सन्दर्भ में शैक्षिक आवश्यकताओं को इंगित करते हैं।

शिक्षा का अर्थ बालक के शरीर, मन, और आत्मा के सर्वांगीण विकास से है। इसमें नैतिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकास प्रमुख है। नैतिकता एवं सिद्धांतों के अभाव में कोई भी विद्यार्थी स्व नियंत्रण एवं उच्च चरित्र को प्राप्त नहीं कर सकता।

भाषा शिक्षण का पाठ्यक्रम इस प्रकार सुनिश्चित किया जाए जिसमें सहयोग, मानवाधिकारों के प्रति सम्मान, सहनशीलता, न्याय, सुयोग्य नागरिकता, विविधता तथा विवादों के शान्तिपूर्ण हल जैसे मूल्यों की वकालत की गई हो ताकि विद्यालयों से जिम्मेदार नागरिकों का उत्पादन हो और वे शान्तिपूर्ण जीवन जीने का महत्व समझ सकें। भाषा शिक्षक बहुत सरलता से अपने कक्षा शिक्षण में मूल्यों का निरूपण कर सकता है। भाषा शिक्षण के अन्तर्गत शिक्षक विविध मूल्याधारित प्रश्नों, उदाहरणों, अभ्यास कार्यों के द्वारा विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास कर सकता है।

भाषा शिक्षण का पाठ्यक्रम इस प्रकार सुनिश्चित किया जाए जिसमें सहयोग, मानवाधिकारों के प्रति सम्मान, सहनशीलता, न्याय, सुयोग्य नागरिकता, विविधता तथा विवादों के शान्तिपूर्ण हल जैसे मूल्यों की वकालत की गई हो ताकि विद्यालयों से जिम्मेदार नागरिकों का उत्पादन हो और वे शान्तिपूर्ण जीवन जीने का महत्व समझ सकें। भाषा शिक्षक बहुत सरलता से अपने कक्षा शिक्षण में मूल्यों का निरूपण कर सकता है। भाषा शिक्षण के अन्तर्गत शिक्षक विविध मूल्याधारित प्रश्नों, उदाहरणों, अभ्यास कार्यों के द्वारा विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास कर सकता है।

समस्या का औचित्य

आज विद्यार्थी टेलीविजन और पारिवारिक अव्यवस्थाओं के चलते तेजी से पथ भ्रष्ट हो रहे हैं। मूल्यों के अभाव में वे जो कुछ भी टेलीविजन एवं इंटरनेट पर देखते हैं उसे ग्रहण कर रहे हैं। अभिभावकों के पास समयाभाव बढ़ता जा रहा है, ऐसे में बच्चे डे-केयर केन्द्रों एवं नौकरो के पास पल रहे हैं। इन कारणों से उनमें मूल्यों का निरूपण नहीं हो पाता।

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री का उद्देश्य कक्षा 6, कक्षा 7, कक्षा 8 की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में निहित मूल्यों को ज्ञात करना है। शोधकर्त्री इसके द्वारा यह पता लगाने का प्रयास करेगी कि मूल्यों के सन्दर्भ में यह पाठ्यपुस्तकें कितनी उपयुक्त हैं। इनमें प्रमुखता से किन मूल्यों को उजागर किया गया है और किन मूल्यों को अपेक्षाकृत कम महत्व प्रदान किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

- उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में निहित मूल्यों को चिन्हित करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में शाश्वत जीवन मूल्यों को ज्ञात करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में समसामयिक मूल्यों को चिन्हित करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में धार्मिक मूल्यों का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
- उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में सौन्दर्यात्मक मूल्यों का अध्ययन करना।
- हिन्दी भाषा के शिक्षकों की मूल्यों के प्रति जागरुकता ज्ञात करना।
- हिन्दी भाषा में मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करने हेतु विशेषज्ञों के सुझाव प्राप्त करना।

तकनीकी शब्दों का परिभाषिकरण

पाठ्यपुस्तक

प्रस्तावित शोध कार्य में हिन्दी पाठ्यपुस्तकों से अभिप्रायः राजस्थान की उच्च प्राथमिक स्तर की राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों से है।

मूल्य

प्रस्तावित शोध कार्य में मूल्यों से अभिप्राय शाश्वत मूल्यों में सत्यं, शिवम् एवं सौन्दर्य पर आधारित मूल्यों एवं समसामयिक मूल्यों में वर्तमान भारतीय समाज के लिये अनिवार्य मूल्यों से है।

शोध में प्रयुक्त मूल्य

- **शाश्वत मूल्य** – शाश्वत मूल्यों का सन्दर्भ सत्यं, शिवम्, सुन्दरम् की भावना से है।
- **समसामयिक मूल्य** – वे मूल्य जिनका महत्व भारतीय समाज में वर्तमान समय में है यथा साहस, श्रम, करुणा, प्रेम, राष्ट्र – भक्ति, प्रजातांत्रिकता।
- **सामाजिक मूल्य** – सामाजिक मूल्यों को उन कसौटियों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिनके द्वारा समूह या समाज व्यक्तियों, प्रतिमानों, उद्देश्यों के महत्व का निर्णय करते हैं।
- **धार्मिक मूल्य** – यह वह नीति शास्त्र है, जो धार्मिक मान्यताओं पर निर्भर होते हैं। पूजा, अर्चना, ईश्वर में आस्था, मोक्ष से सम्बन्धित मान्यताओं को इनके अन्तर्गत रखा जाता है। धार्मिक मूल्य किसी धर्म विशेष के ग्रन्थों, परम्पराओं एवं मान्यताओं में निहित होते हैं।
- **नैतिक मूल्य** – इनका तात्पर्य उन मानकों से है जो व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित करते हैं। यह सही आचरण के मूलभूत सिद्धान्तों पर आधारित होते हैं। ये व्यक्ति के जीवन में अनुशासन, स्व नियंत्रण, व्यवहार के उच्च आदर्श, ईमानदारी जैसे गुणों को अंकुरित करते हैं।
- **सांस्कृतिक मूल्य** – सांस्कृतिक मूल्यों का तात्पर्य उन कारकों से हैं जो किसी समाज के सांस्कृतिक अवयवों का निर्धारण करते हैं तथा जिनके अन्तर्गत संस्कृति के अवयवों का समय-समय पर स्थानान्तरण होता रहता है।
- **सौन्दर्यात्मक मूल्य** – ये मूल्य जीवन के कलात्मक पक्ष से सम्बन्धित होते हैं, इनके अन्तर्गत प्राकृतिक सौन्दर्य, कला के प्रति प्रेम, उदारता आदि को स्थान दिया जाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु विषयवस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। यह विधि चुनी हुई लिखित सामग्री में से किसी अनुसंधान से सम्बद्ध तथ्यों को प्राप्त करने की विधि है। यह क्रमबद्ध, वस्तुनिष्ठ और मात्रात्मक होती है।

न्यादर्श

- शोधकार्य में उद्देश्यनिष्ठ न्यादर्श चयन विधि का प्रयोग कर न्यादर्श चयन किया गया है। न्यादर्श एक पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार इकाइयों के समूह में से निश्चित प्रतिशत का चयन है। इस हेतु-
- अ- कक्षा 6, कक्षा 7, तथा कक्षा 8 की हिन्दी की राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् की पाठ्यपुस्तकों को विषयवस्तु विश्लेषण के लिये न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।
- ब- केन्द्रीय, निजी एवं सरकारी विद्यालयों के 81 शिक्षकों का चयन हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में निहित मूल्यों के सम्बन्ध में सुझाव प्राप्त करने हेतु किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों के विषयवस्तु विश्लेषण के लिये चेक लिस्ट मापनी का प्रयोग किया गया है।
- शिक्षकों के सुझाव प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।
- साक्षात्कार अनुसूची अर्ध संरचित खुले सिरे की बनाई गई है।

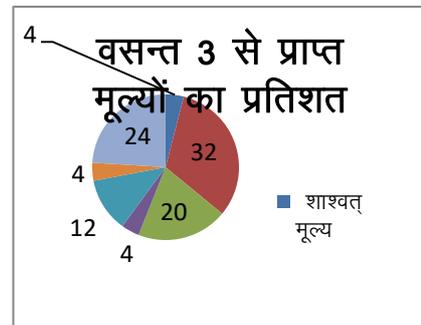
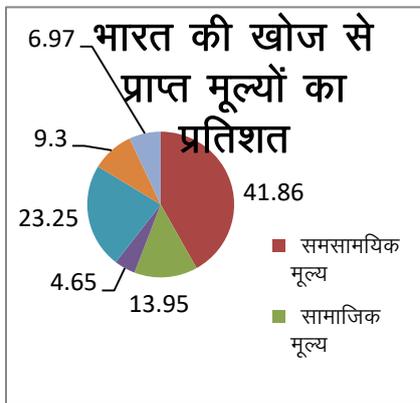
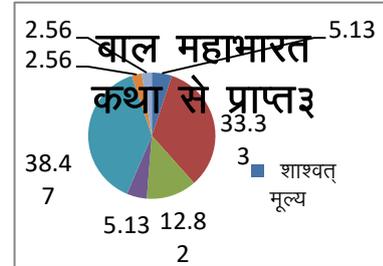
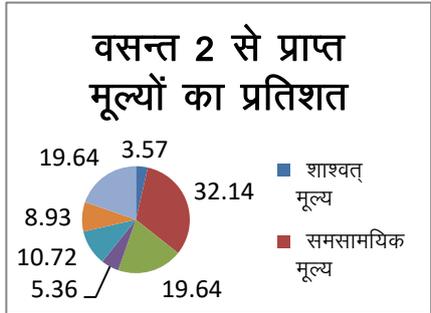
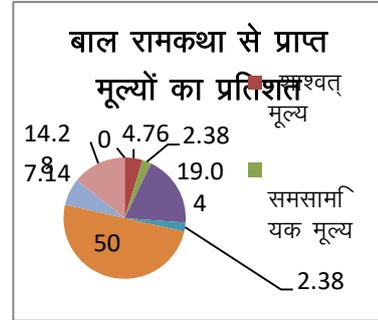
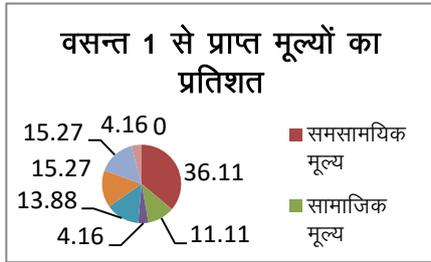
परिसीमायें

प्रस्तावित अध्ययन समय एवं साधनों के सन्दर्भ में निम्न प्रकार से परिसीमित किया गया है –

- प्रस्तुत शोध राजस्थान राज्य के जयपुर शहर तक सीमित रखा गया है।
- उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी की राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् की पाठ्यपुस्तकों तक शोध कार्य सीमित किया गया है।
- पाठ्यपुस्तकों में से चयनित जीवन मूल्यों को ही ज्ञात किया गया है।

परिणाम और निष्कर्ष –

कक्षा – 6 वसन्त भाग – 1



BIBLIOGRAPHY

- Amareshwaran, N. (2010). Moral Values in Intermediate Students, New Delhi : Discovery Publishing House Pvt. Ltd.
- Baron, R. & et. Al. (2009). Social Psychology. New Delhi : Pearson Publication.
- Baron, R. (2012). Psychology. New Delhi : Pearson Education Publishing.
- Best, J.W. & James V. Khan (1986). Reasearch in Education. New Delhi : Prentice Hall of India Private Limited. Page 90.
- Best, J.W. (2002). Reasearch in Education. Singapore : Pearson Education.
- Bhatnagar, R.P. & Bhatnagar, Minakshi (1994).Experimental Reasearch in Behavioural Science. Meerut : Igol Book International
- <http://shodh.inflibnet.ac/10603/8853>
- <http://www.eric.ed.gov/EJ776352>
- <http://shodh.inflibnet.ac>
- <http://shodh.inflibnet.ac>

*** Corresponding Author**

डॉ. स्वाति पारीक

सहायक प्रोफेसर,

एस.एस. जैन सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सांगानेर जयपुर

Email: druma7646@gmail.com